वार्तालाप-582, निलंगा-2, दिनांक 21.06.08
Disc.CD No.582, dated 21.06.08 at Nilanga-2
Extracts-Part-1

समयः 02.35-04.18

जिज्ञासुः बाबा, वास्तुशास्त्र के मुताबिक जो अष्ट देव हैं, पूरे अष्टदेव का क्लेरिफिकेशन होना।

बाबाः अब आप वास्तुशास्त्र का अध्ययन ज्यादा किया है तो उसके मुताबिक करेंगे। वैज्ञानिक अपने मुताबिक करेगा। डाक्टर होगा वो अपने मुताबिक करेगा।

जिज्ञासुः हाँ, स्प्रिच्युअल प्वाइंट आफ व्यू (spiritual point of view).

बाबाः कोई भी स्प्रिच्युअल प्वाइंट है, स्प्रिच्युअल कहाँ से आता है? वास्तुशास्त्र से स्प्रिच्युअल नहीं आता है। स्प्रिच्युअल आता है स्पिरिट (spirit) से। बड़े ते बड़ी स्पिरिट कौन है? शिवबाप। वहाँ से ही स्प्रिच्युअल आता है। ये स्प्रिच्युअल नालेज सिवाए सुप्रीम सोल स्पिरिट के और कोई दे ही नहीं सकता। वास्तु शास्त्र तो ये द्वापरयुग से बनना शुरु हुए हैं। उससे पहले वास्तुशास्त्र नहीं था। मनुष्यों की रचना है।

Time: 02.35-04.18

Student: Baba, I wish to get the clarification of all the eight deities in accordance with *vastushastra* (science of architecture)?

Baba: Well, you have studied architecture more; so you will tally according to that. A scientist will tally in his own way. A doctor will tally in his own way.

Student: Yes, the spiritual point of view.

Baba: Whichever *spiritual point* it is, where does *spiritual* emerge from? *Spiritual* does not come from architecture. [The word] *spiritual* comes from *spirit*. Who is the highest *spirit*? The Father Shiva. *Spiritual* comes from there only. Nobody except the *supreme soul spirit* can give this *spiritual knowledge* at all. This science of architecture has started from Copper Age. There was no science of architecture before that. It is a creation of human beings.

जिज्ञासुः स्प्रिच्युअल में अष्ट देव क्यों मानते?

बाबाः स्प्रिच्युअल में अष्ट देव क्यों मानते हैं?

जिज्ञासुः क्यों मानते हैं अष्टदेव को?

बाबाः वो इसलिए मानते हैं कि आठ ग्रह हैं संसार के। वो जड़ ग्रह हैं। और ये चैतन्य आत्मायें हैं जो संसार को चलाने वाली हैं, संसार को बनाने वाली हैं। संसार के नव-निर्माण में आगे-आगे कदम बढ़ाकरके ईश्वरीय कार्य को संपन्न करने वाली हैं। वो तो जड़ ग्रह हैं जिनके आधार पर वास्तुशास्त्र चलता है। ये तो चैतन्य आत्मायें हैं।

Student: Why are eight deities famous in spirituality?

Baba: Why are eight deities famous in spirituality?

Student: Why do they believe in eight deities?

Baba: They believe because there are eight planets in the world. They are non-living planets. And these are living souls which run the world, make the world. They step ahead in the renewal of the world and accomplish the task of God. Those are non-living planets which are the basis of the *vastushastra*. These are living souls.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 04.20-05.35

जिज्ञासुः बाबा, हम एक-दूसरे को देखते हैं, लेकिन वो देखना भी देखना नहीं होता। आभास होता हैं। इसकी वजह क्या है?

बाबाः इन आँखों से जो कुछ देखते हो वो सब विनाश होने वाला है।

Time: 04.20-05.35
Student: Baba, we see each other, but even that seeing is not seeing in a real sense. It appears false. What is its reason?
Baba: Whatever you see through these eyes is going to be destroyed.

जिज्ञासुः नहीं, आभास क्यों महसूस होता?

बाबाः सर्वम् क्षणिकम्-2, सर्वम मिथ्या-2। वो टाइम अब आ गया। जो देखते हैं वो देहभान से देखते हैं। इसलिए जो देखना चाहिए, वो आँख हम अपनी गुप्त कर लेते हैं, मर्ज कर लेते हैं। देखने योग्य चीज़ है - वो सिर्फ तीसरी आँख से देखने योग्य है। तीसरी आँख मर्ज हो जाती है। ये स्थूल आँखें स्थूल चीज़ें देखती है। जो आज हैं और 35 साल के अन्दर सब खलास होने वाली हैं। तो अज्ञान ही तो कहेंगे। अज्ञानता की आँख ज्यादा काम कर रही है या स्पिरिट ज्यादा काम कर रही है? (किसी ने कहा - स्पिरिट।) स्पिरिट ज्यादा काम कर रही है? स्पिरिट ज्यादा काम कर रही है अभी?

जिज्ञासुः अभी नहीं।

बाबाः फिर?

Student: No, why does it appear false?
Baba: *Sarvam kshanikam*-2*, sarvam mithya*-2 (everything is momentary, everything is unreal). That time has arrived now. Whatever we see, it is seen with body consciousness. This is why we hide, we *merge* the eyes through which we should see. Whatever is worth seeing is only worth seeing through the third eye. The third eye is merged. These physical eyes see physical things. Whatever is present today is going to perish within 35 years. So, that will be called ignorance only. Are the eyes of ignorance working more or is the *spirit* working more? Is the *spirit* working more? Is the *spirit* working more now?
Student: Not now.
Baba: Then?

समयः 05.40-09.15

जिज्ञासुः बाबा, बच्चा पैदा होते ही रोता क्यों है?

बाबाः क्योंकि जो आत्मा बनने वाले हैं भगवान के बच्चे (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) सुनो, पूरी बात समझ तो लो।

Time: 05.40-09.15
Student: Baba, why does a child cry as soon as he is born?
Baba: It is because the children of God who become souls... (Student said something)... Listen; first understand the complete topic.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः पूर्व जन्म की याद आती है क्या?

बाबाः क्योंकि भगवान जब इस सृष्टि पर आया था, और भगवान के जो आत्मा रूपी बच्चे बने थे, आत्मिक स्थिति में जिन्होंने अपने को स्थिर किया था पहले-पहले, वो आत्मा रूपी राजा बनने वाले बच्चे रोते-रोते पैदा होते हैं। रोते-रोते पैदा होने का मतलब? जब मार पड़ती है परिस्थितियों की तब उनको अपने स्वरूप का ज्ञान होता है। रुद्रमाला उनका नाम है।

जिज्ञासुः पिछला जन्म याद आता हैं क्या?

बाबाः 84 जन्म याद आ जाते हैं। पिछले जन्म तो छोड़ो।

जिज्ञासुः फिर भूल क्यों जाता है?

बाबाः देहभान में आ जाते हैं तो भूल जाते हैं। देवताओं को देह होती है कि नहीं? देवतायें देह के अंगों से संतान पैदा करते हैं कि नहीं? करते हैं। आँख भी तो देह का अंग है। भले श्रेष्ठ इन्द्रिय है। श्रेष्ठ इन्द्रियों के प्यार से संतान की पैदाइश होती है। लेकिन है तो देह।

Student: Does he remember his past birth?

Baba: Because when God comes in this world, and those who become soul-like children of God, those who made themselves constant in the soul conscious stage first of all, those children who become king-like souls are born crying. What is meant by being born crying? When they suffer the blows of circumstances, they realize their form. Their name is *Rudramala* (the rosary of *Rudra*).

Student: Do they remember the past birth?

Baba: They recollect the 84 births; leave alone the previous birth.

Student: Then why do they forget it?

Baba: When they become body conscious, they forget it. Do the deities have bodies or not? Do the deities give birth to children through the organs of the body or not? They do. Eyes are also organs of the body. Although they are righteous organs; children are born through the love of the righteous organs. But it is a body.

जिज्ञासुः जिनका अबार्शन (abortion) होता है वो कौनसी आत्मायें हैं?

बाबाः राक्षसी आत्मायें हैं।

जिज्ञासुः आने के पहले ही मर जाते हैं।

बाबाः अकाले मौत राक्षसी दुनिया में होता है या दैवी दुनिया में होता है? कहाँ होता है? (सबने कहाः राक्षसी दुनिया में।)

जिज्ञासुः अबार्शन जिसका होता है वो कौनसी आत्मा है?

बाबाः अभी तो बताया।

जिज्ञासुः वो तो पैदा होते ही मर जाना। पैदा होते ही मर जाना - ये कौन सी आत्मा है?

बाबाः और जो पेट के अन्दर ही अबार्शन करके मार दिये जाते हैं वो?

जिज्ञासुः उसमें इसमें कोई फर्क नहीं है क्या?

बाबाः क्यों फर्क होना चाहिए? अबार्शन करना ये राक्षसी दुनिया की बात है या देवताई दुनिया की बात है? (जिज्ञासुः राक्षसी।) राक्षसी दुनिया की बात है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Which are the souls that undergo abortion?
Baba: They are demoniac souls.
Student: They die before their arrival (i.e. birth).
Baba: Does untimely death occur in the demoniac world or in divine world? Where does it occur? (Everyone said: In the demoniac world.)
Student: Which are the souls that undergo abortion?
Baba: It was said just now.
Student: They die as soon as they are born. Which are the souls who die as soon as they are born?
Baba: And what about those who are killed in the womb itself by abortion?
Student: Is there no difference between them?
Baba: Why should there be a difference? Is performing abortion a subject of the demoniac world or of divine world? (Student: Demoniac world.) It is about the demoniac world.

जिज्ञासुः ये बाहर की हो गयी। अंदर भी राक्षसी दुनिया है क्या? गर्भ जेल है ना। उसमें राक्षसी दुनिया कैसे आएगी? बाहर की दुनिया में राक्षसी दुनिया है ना।
बाबाः जेल भी जो गर्भ तैयार होता है, वो राक्षस मनुष्य तैयार करते हैं या कोई देवता तैयार करता है? किसके कर्म से तैयार होता है?
जिज्ञासुः देवतायें भी तो आखिर मनुष्य ही हैं ना।
बाबाः मनुष्य मन वाले होते हैं। उनको मनुष्य कहा जाता है। देवतायें अमन होते हैं। उनका मन मर्ज हो जाता है। देवताओँ को मनुष्य नहीं कहा जा सकता है। मननात् मनुष्य। जो मनन-चिन्तन-मंथन करता है - वो मनुष्य है। जो मन का उपयोग करता है वो मनुष्य है। देवतायें मन का उपयोग नहीं करते।
Student: This is about the outside [world]? Is there a demoniac world inside as well? It is a jail-like womb, isn't it? How can demoniac world come in it? The demoniac world is in the outside [world], isn't it?
Baba: Even the jail-like womb that is created; do human beings make those demons or do the deities make them? It is prepared by whose *karma* (actions)?
Student: After all, even the deities are human beings, aren't they?
Baba: Human beings (*manushya*) have mind (*man*). They are called *manushya*. Deities are mindless (*aman*). Their mind is merged. Deities cannot be called *manushya. Mananaat manushya*, the one who thinks and churns is a *manushya*. The one who uses his mind is a human being. Deities do not use their mind.

Extracts-Part-2

समयः 09.20-10.15

जिज्ञासुः चन्द्रवंश और सूर्यवंश की मिलाकर जैसे जोड़ी बनती है, वैसे अन्य धर्मों में किसको-किसको मिलाकर जोड़ी बनती है?
बाबाः हर धर्म के दो-दो छेड़े हो गए हैं। जैसे इस्लाम धर्मके दो छेड़े हो गए हैं। इस्लाम धर्म से मुस्लिम निकल पड़े। मुस्लिम से दो छेड़े हो गए - शिया और सुन्नी। ऐसे ही बौद्ध धर्म से दो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

छेड़े हो गए - हीनयान, महायान। ऐसे ही जो देवी-देवता सनातन धर्म है, उसके भी दो छेड़े हैं। एक फेलियर और एक पास होने वाले। एक चन्द्रवंशी, एक सूर्यवंशी।

TimeTime: 09.20-10.15

Student: Just as the Sun dynasty (*Suryavansh*) and the Moon dynasty (*Candravansh*) together make a pair, similarly, which are the religions that make a pair together ?

Baba: Two groups have been formed in every religion. For example, Islam has been divided into two groups. Muslims emerged from Islam. Muslims are divided into two groups – Shiya and Sunni. Similarly, Buddhism has been divided into two groups – Heenyaan, Mahayaan. Similarly, there are two groups in the Ancient Deity religion as well. One are failures and the others are those who *pass*. One are those belonging to the Moon dynasty and other are those belonging to the Sun dynasty.

समयः 10.20-12.40

जिज्ञासुः बाबा, जब आत्मा शरीर छोड़ देती है और गर्भ में चली जाती है, दूसरे गर्भ में चली जाती है तो वहाँ 5 महीने का शरीर बनने के बाद ही आत्मा उसमें समाविष्ट होती है।

बाबाः हाँजी।

Time: 10.20-12.40

Student: Baba, when a soul leaves the body and enters a womb, when it enters into another womb, the soul enters it only after the body is 5 months old.

Baba: Yes.

जिज्ञासुः गर्भ के स्टार्टिंग (starting) में क्यों नहीं समाविष्ट होती है? पांच महीने के बाद क्यों?

बाबाः उसका आधार तैयार होगा तभी तो आत्मा प्रवेश करेगी; न कि जिन्दा आदमी में प्रवेश करेगी। जब तक पिंड तैयार नहीं होगा, तो उसमें आत्मा प्रवेश कैसे करेगी? ये कुदरत है कि आदमी मरता बाद में है, शरीर बाद में छोड़ता है, चार महीने पहले से ही उसके कर्मों के अनुसार..., अंधा होना होगा तो गर्भ में भी अंधा हो सकता है। लंगड़ा होना होगा तो गर्भ में ही लंगड़ा हो जाएगा। उसका पिंड पहले ही तैयार हो जाता है।

जिज्ञासुः ये जो संस्कार लेके जाती है वो बाद में लेके जाती है क्या? आत्मा साथ में....

बाबाः पूरी बात सुन तो लेना चाहिए। आप तो बीच में ही प्रश्न करते हैं। जो आत्मा है शरीर छोड़ने से पहले ही पुराना शरीर छोड़ा और 5 महीने, 4 महीने पहले से ही गर्भ पिंड पहले तैयार होता है। वो किस आधार पर तैयार होता है? (किसी ने कहा - कर्मों के आधार पर।) हाँ, वो अपने कर्मों के आधार पर पिंड तैयार हो गया। जब तक वो पिंड तैयार नहीं होगा, तब तक ये अपना शरीर छोड़ेगा ही नहीं। हाथ निकलने होंगे तो हाथ निकल जायेंगे, टांग निकलनी होगी तो टांग निकल जाएगी। पूरा शरीर स्वस्थ तैयार होना होगा तो पूरा पिंड तैयार हो जाएगा। फिर इधर शरीर छोड़ करके आत्मा वहाँ प्रवेश करेगी।

Student: Why does it not enter in the *starting* [month] of the body? Why does it enter after five months?

Baba: The soul will enter only when its base is ready or will it enter in a living person? How will the soul enter unless the foetus (*pind*) is ready? It is nature's wonder that a person dies later,

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

leaves his body later, but his foetus gets ready in the womb four months prior to that as per his *karma*; if he is to be born blind, he can become blind in the womb itself. If he is to be born lame, he will become lame in the womb itself. His foetus gets ready beforehand.
Student: Does it carry the *sanskars* later? The soul along with it....
Baba: You should at least listen the topic completely. You raise questions in between. A soul, before leaving its body, before it leaves its old body, the foetus gets ready four to five months earlier in the womb. On what basis does it get ready? (Someone said: on the basis of actions.) Yes, that foetus got ready on the basis of its (the soul's) actions. Unless the foetus is ready, it will not leave its [old] body at all. If the hands have to grow, they will grow. If the legs have to grow, they will grow. If the entire body is to be healthy, then the entire foetus will become ready. Then the soul will leave its body (the old body) here and enter there (another womb).

जिज्ञासुः ये होने से पहले उसकी अवस्था कैसी होगी बुढ़ापे में?
बाबाः किसकी?
जिज्ञासुः आत्मा की।
बाबाः अच्छे कर्म किये होंगे तो अच्छी अवस्था होगी। खराब कर्म किये होंगे तो खराब अवस्था होगी।
जिज्ञासुः और ये कब फैलता है? ये संस्कार जो साथ में ले जाते है वो गर्भ में कब फैलता है?
बाबाः बिल्कुल। हरेक का वायब्रेशन अलग-अलग है। हरेक का वायुमण्डल अलग-अलग है। हरेक का सूक्ष्म शरीर अलग-अलग कार्य करता है।
Student: How will its stage be in the old age [of the previous body] before this happens?
Baba: Whose?
Student: Of the soul.
Baba: If it has performed good actions, the stage will be good. If it has performed bad actions, the stage will be bad.
Student: And when does this spread? When does this *sanskars* that are taken along with [the soul] spread in the womb?
Baba: Definitely. The vibrations of each one are different. The atmosphere of each one is different. The subtle body of each one works differently.

वार्तालाप-582 कलयमगलनगर, दिनांक 12.06.08
Disc.CD No.582, dated 12.06.08 at Kalaimagalnagar

समयः 04.50-09.00
जिज्ञासुः बाबा, मुरली में आया है कि दुनिया में भाग्यशाली वो है जो धनवान हो, और बहुत जनवान हो और जिसके घर में बहुत मेहमान आते हों।
बाबाः हाँ, बहुत मेहमान जिसके घर में आएगा वो धनवान होगा या गरीब होगा? लाजमी धनवान ही होगा तो उन मेहमानों की परवरिश कर सकेगा। नहीं तो सारे असंतुष्ट होके चले जायेंगे। धनवान भी हो और फिर ढ़ेर सारे मेहमान आ रहे हों, उनकी परवरिश करने के लिए अकेला काम करेगा क्या? ढ़ेर सारे सहयोगी भी हों। तो कहेंगे धनवान भी हो और सहयोगी जन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

भी बहुत हो। तब कहेंगे वो भाग्यशाली है। अभी स्थूल में भी ये बात लागू होती है। और सूक्ष्म में भी ब्राह्मणों की बेहद की दुनिया में भी ये बात लागू होती है। आगे चलके सब क्लीयर हो जावेगा।

Time: 04.50-09.00

Student: Baba, it has been mentioned in the Murli that the one who is wealthy, has many helpers, and the one who hosts many guests is very fortunate in the world.

Baba: Yes, will the one whose house is visited by many guests be wealthy or poor? It is obvious that he will be wealthy it is then that he will be able to take care of the guests. Otherwise, all will become unsatisfied and go. If he is wealthy and numerous guests are arriving at his place; will he work alone to take care of them? He should have a lot of helpers too. Then it will be said that he should be wealthy and he should have many helping hands as well. Then it will be said that he is fortunate. Now this is applicable in a limited sense as well as it is applicable in a subtle form in the unlimited Brahmin world. Everything will become *clear* in the future.

क्या? ये ज्ञान बेहद में बहुत फैलेगा सारे संसार में। मान लो अष्ट देव हैं। अष्ट देव अपने मेहमानों को..., इतने बढ़ेंगे मेहमान, इतने बढ़ेंगे, कि काउंट (count) करना मुश्किल हो जावेगा। जैसे बाप के घर में ढ़ेर मेहमान आवेंगे। क्या बोला मुरली में? मुरली में कुछ बोला है मेहमानों के बारे में? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) नहीं। इतने आवेंगे कि आबू रोड़ से लेकरके माउंट आबू तक क्यू लगी ही रहेगी आने वालों की और जाने वालों की। सारा आबू ही खरीद करना पड़ेगा। इतने मेहमान आवेंगे।

जिज्ञासुः वो तो लास्ट में है ना बाबा?

बाबाः वो लास्ट माना अभी नहीं कुछ करेंगे? अभी ट्रस्टी नहीं बनेंगे?

दूसरा जिज्ञासुः अभी कहाँ होगा?

बाबाः अभी कहाँ होगा? बाबा ने तो बोल दिया है। बाबा ने तो मुरली में बोल दिया है। क्या बोल दिया? सारा आबू ही खरीद करना पड़ेगा। तो ये सारी जिम्मेवारी बाप के ऊपर थोपेंगे क्या? कि जो बाप के बच्चे होंगे खुद भी जिम्मेवारी थोड़ी उठायेंगे? अरे! उठायेंगे या नहीं उठायेंगे? (जिज्ञासुः उठायेंगे।) उठायेंगे। वो कहेंगे - अरे। जब सारा आबू खरीदना ही खरीदना है तो हम भी पहले से...। क्या? एक ईंट हम भी अपनी लगा दे।

What? This knowledge will spread a lot in an unlimited sense in the world. Suppose there are the eight deities. The eight deities to their guests... the number of guests will increase so much that it becomes difficult to *count*. For example, a lot of guests will arrive at the Father's home. What has been said in the Murli? Is something said about guests in the murlis? (Student said something.) No. So many people will come that there will be a continuous *queue* of visitors from Abu Road to Mount Abu. You will have to purchase entire Mount Abu. You will get so many guests.

Student: Baba, that is about the *last* time, isn't it?

Baba: That is about the *last* time, so will you not do anything now? Will you not become *trustee* now?

Second student: How will it happen now?

Baba: How will it happen now? Baba has already said; Baba has already said in the Murli. What has He said? You will have to purchase entire Mount Abu. So, will you put up this entire

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

responsibility on the Father? Or will the Father's children also take some responsibility themselves? Arey! Will they take [the responsibility] or not? (Student: They will take.) They will take. They will say: Arey! When the entire Abu is to be purchased, then we too, in advance; what? We too should add our brick.

जिज्ञासुः नहीं बाबा प्रजापिता ब्रह्मा को मानेंगे तो तभी क्यू (queue) लगेगी ना।

बाबाः हाँ, अभी कहाँ मानते हैं। वो तो लास्ट में मानेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा को तो लास्ट में मानेंगे ना। तब तक ब्रह्मा को तो मानो।

जिज्ञासुः मानेंगे तो भी इतना क्यू नहीं लगेगा ना।

बाबाः हाँ, वो तो लास्ट की बात है ना। अभी की थोड़े ही है। अभी तो ब्रह्मा प्यारा लगता है। ब्रह्माकुमार-कुमारी भी प्यारे लगते हैं। कैसे छोड़ें? लास्ट में जब होगा तब देखा जाएगा।

Student: No Baba, a queue will be formed only when they accept Prajapita Brahma.
Baba: Yes, do they accept him now. They will accept him in the *last*. They will accept Prajapita Brahma in the *last*, will they not? Till then at least accept Brahma.
Student: Even if they accept [him], such a *queue* will not be formed, will it be?
Baba (said jokingly): Yes, that is about the *last* time, isn't it? It is not about now. Now Brahma seems to be lovely. Brahmakumar-kumaris seem to be lovely too. How can we leave them? We will see it when happens in the *last*. ☺

Extracts-Part-3

समयः 15.38-24.35

जिज्ञासुः बाबा, चेन्नई में ऐसा है कि कई भाई और बहनें, मातायें बाबा जब आते हैं उसी समय वो आते हैं। बाकी समय.....

बाबाः क्लास करने के लिए नहीं आते हैं?

जिज्ञासुः नहीं आते।

बाबाः कहीँ भी? कोई गीता पाठशाला में नहीं?

जिज्ञासुः ऐसे कोई हैं। ऐसे तो कुछ मातायें और कन्यायें और.....

बाबाः कोई ऐसे भी तो होंगे, आज एक गीतापाठशाला में गए, कल दूसरी गीतापाठशाला में जाए, परसों तीसरी गीतापाठशाला में जाए। कहीं न कहीं उनकी संगठन में उपस्थिति होती रहती है।

जिज्ञासुः जब बाबा आयेंगे ना तब फोन करेंगे तो वो आयेंगे।

बाबाः बाकी किसी गीता पाठशाला में जाते ही नहीं?

दूसरा जिज्ञासुः हरेक संडे।

बाबाः संडे-संडे तो जाते हैं, बता रहे हैं।

Time: 15.38-24.35
Student: Baba, in Chennai, many brothers, sisters and mothers come [to the class] only when Baba comes. Rest of the time…
Baba: Don't they come to attend the classes?
Student: They don't.
Baba: Nowhere? Don't they go to any *Gitapathshala*?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: There are some such persons. There are some mothers and virgins and….
Baba: There must also be such ones who go to one *Gitapathshala* today, to another *Gitapathshala* tomorrow, to a third *Gitapathshala* the day after tomorrow. They attend *sangathan* (gathering) somewhere or the other.
Student: When Baba comes and when we call them on phone, they come.
Baba: Don't they go to any other *Gitapathshala* at all?
Second student: Every Sunday.
Baba: He is telling that they go every Sunday.

दूसरा जिज्ञासुः संडे-संडे बराबर आते हैं।

बाबाः कोई न कोई गीता पाठशाला में बराबर संडे-संडे जाते हैं, बता रहे हैं। ये तो बता रहे हैं। मुसलमान और क्रिश्चियन तो बन गए।

जिज्ञासुः संडे-संडे तो आते हैं लेकिन डेली क्लास को नहीं आते। डेली क्लास में नहीं आ सकते है।

बाबाः पक्के हिन्दू सो देवता नहीं बने हैं लेकिन...। अच्छा जो दूसरे धर्म में कनवर्ट होते हैं वो फिर देवता बनते नहीं हैं क्या? (जिज्ञासुः बनते हैं।) बनते हैं ना। लास्ट में बन जावेंगे।

जिज्ञासुः वो क्या होता है संडे का जो संगठन है उसमें भी कोई आते ही नहीं हैं; चार-पांच संगठन में आते ही नहीं हैं।

बाबाः कितने आते हैं?

जिज्ञासुः नहीं आते हैं।

बाबाः संगठन रजिस्टर में, जो भी संगठन रजिस्टर है, गीता पाठशालाओं के....।

जिज्ञासुः उसमें नहीं है।

बाबाः ...उसकी कापियाँ वहाँ नहीं भेजी जाती? जैसे आज संगठन हो रहा है। इसकी कापी हेड आफिस नहीं भेजी जाती है?

जिज्ञासुः नहीं।

Student: They come every Sunday regularly.
Baba: He is telling that they go to some or the other *Gitapathshala* every Sunday regularly. He is telling this. They certainly have become Muslims and Christians.
Student: They do come every Sunday. But they do not attend the daily classes. They cannot come to the daily class.
Baba: They have not become firm Hindus so deities. OK, don't those who *convert* to other religions become deities again? (Student: They do become.) They do become, don't they? They will become in the *last*.
Student: The fact is that no one comes for the Sunday gatherings either – They do not come at all in the four-five gatherings.
Baba: How many come?
Student: They do not come.
Baba: In the *sangathan* registers, in the *sangathan* registers of the *Gitapathshalas*...
Student: It is not there in that.
Baba: ...Are the copies not sent there? For example, a gathering is taking place today. Don't you send its copy (copy of attendance) to the Head Office?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: No.

बाबाः हाँ, उसकी फोटोकापी हेड आफिस भेजनी चाहिए। या जब बाबा आते हैं तो बाबा के साथ दे दो।

जिज्ञासुः ऐसा कुछ नहीं किया।

बाबाः हाँ, होना चाहिए ना। आप खुद ही ध्यान नहीं दे रहे हैं संगठन का।

जिज्ञासुः हर संगठन का ऐसा भेजना है?

बाबाः फोटोकापी निकाल लो। जैसे अभी ये कापी दी, उसमें नीचे का हिस्सा छोड़ दो। और नए पेज से शुरुआत कर लो 'महा संगठन'। जब बाबा आते हैं तो उस समय (बाबा ने कापी मंगवाई और दिखाया) जैसे यहाँ से पूरा कर दिया। यहाँ छूट गया पूरा। ये जगह खाली रह गई। इसे काट दो। नए पेज से शुरु कर दो। तो उसमें एक पेज की पूरी फोटोकापी आ जाएगी। पूरी फोटोकापी वहाँ भेज दो नहीं तो उसमें साइन करके जो इंचार्ज बहन है वो साइन करके उसे भेज दे। नहीं तो एक कागज़ रख दो। इस पर भी साइन कर दें और कागज़ के ऊपर भी साईन कर दें। स्थान का नाम लिखें, गीता पाठशाला का एड्रेस वगैरह, मुखिया कौन है? ओरिजिनल कापी वहाँ पहुँचती रहेगी। पोस्ट से नहीं भेजें, जब बाबा आते हैं तब बाबा के हाथ में दे दें।

Baba: Yes, you should send its photocopy to the Head Office. Or give it with Baba when Baba comes [to your place].

Student: We haven't done anything like this.

Baba: Yes, it should be done like this, shouldn't it? You yourself are not paying attention to the gathering.

Student: Should we send like this for every *sangathan*?

Baba: Take a *photocopy*. For example, this *copy* (i.e. note-book) which was given now; leave this lower portion [which is empty]. And start from a new *page* [with the heading] *'mahasangathan'* (the big gathering). When Baba comes at that time (Baba asked for the copy and showed it) just like, you completed [signing] here. And this portion was left completely. This portion remained blank. Make a cross in this (blank portion). Start from a new *page*. Then you can have a *photocopy* of the entire page. Send the complete *photocopy* there; it should be signed [by the students] and then the in-charge sister should sign it and send it. Otherwise, keep a paper [so that the students] can sign on this (register) as well as the paper. They should write the name of the place, *address* of the *Gitapathshala*, etc. and who is the head? The *original copy* should be sent there. If you cannot send by *post*, you can hand it over to Baba when Baba comes.

जिज्ञासुः ईमेल से भी भेज सकते हैं?

बाबाः ईमेल कोई प्रूफ नहीं होता है।

जिज्ञासुः स्कैन (scan) करके।

बाबाः स्कैन करके भेज सकते हैं। स्कैन करके भेज सकते हैं। हाँ। ऊपर से साइन कर दें गीता पाठशाला की इंचार्ज। माना नए पेज से शुरुआत करे।

जिज्ञासुः बाबा क्या मासिक संगठन का या जब बाबा आते हैं?

बाबाः जब बाबा आते हैं। मासिक संगठन का भी। नहीं तो पता कैसे चलेगा?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Can we send it e-mail as well?
Baba: E-mail is not a *proof*.
Student: By scanning.
Baba: You can *scan* and send it. You can *scan* and send it. Yes. The in-charge of the *Gitapathshala* should sign on it. Meaning, you can start from a new *page* [the next time].
Student: Baba should we send [the copy of attendance] of the monthly *sangathan* or for the day when Baba comes?
Baba: When Baba comes [and] that of the monthly *sangathan* as well. Otherwise, how will we come to know?

जिज्ञासुः हर संडे हर जगह में होता है अभी।

बाबाः हाँ, महीने में एक बार होता है ना मासिक संगठन।

जिज्ञासुः नहीं, नहीं।

बाबाः ये ही तो गड़बड़ है। महीने में एक मासिक संगठन जरूर कहीं न कहीं होना चाहिए। चार संगठन होते हैं।

जिज्ञासुः हाँ, चार संगठन होते हैं।

बाबाः चार संगठन होते हैं महीने में। तो वो फोटोकापी नहीं भेजी जाती? ये तो ठीक नहीं। चारों जो संगठन होते हैं उनकी फोटोकापी भेजनी चाहिए। नहीं तो कोई ध्यान क्यों देगा?
Student: Now it is organized at every place every Sunday.
Baba: Yes, the monthly *sangathan* is held once in a month, isn't it?
Student: No, no.
Baba: This is the real problem. A monthly gathering should be held once in a month at some or the other place. There are four *sangathans* [in a month].
Student: Yes, four *sangathans* are held [in a month].
Baba: There are four *sangathans* in a month. So, is its (sign register) *photocopy* not sent? This is not correct. You should send the photocopies of all the four *sangathans* that take place. Otherwise, no one will pay attention?

तीसरा जिज्ञासुः बाबा, एक मासिक संगठन इधर नहीं है। जबसे इधर संगठन हुआ तबसे एक मासिक संगठन एक जगह का ही नहीं होता है। आज ये संडे इसके घर में वो संडे उसके घर में।

बाबाः वो ही नहीं होना चाहिए।

तीसरा जिज्ञासुः वो नहीं कर रहे हैं।

बाबाः नहीं कर रहे है तो ठीक है। बाद में पता लगेगा अरे, हमने क्या किया। इससे साबित ये हो जाएगा कि वो अपने परिवार की तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं। लौकिक परिवार के बन्दे तो बने हैं, लेकिन अलौकिक परिवार की तरफ कोई ध्यान, कोई जिम्मेवारी है ही नहीं।
Third student: Baba, here, one monthly *sangathan* is not held. Ever since *sangathans* are held, monthly *sangathan* is not held at one particular place. Today, one Sunday it is held at the house of one person. The next Sunday it is held at the house of other one.
Baba: That itself should not happen.
Third student: That is not being done.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Alright, if they are not doing so; they will know come to know later [and say]: *Arey*, what have we done. It will prove that they do not pay attention to their [*alokik*] family at all. They have indeed become the members of the *lokik* family, but they do not pay any attention, do not feel any responsibility towards the *alokik* family at all.

जिज्ञासुः एक-दो बार मैं भी बुलाया लेकिन सब लोग इकट्ठे नहीं हुए।
बाबाः तो शिवबाबा भी क्या कहेगा? इनको अपना लौकिक परिवार ही दिखाई पड़ता है तो अपने लौकिक परिवार में ही जियो, मरो। शिवबाबा का तो एक हाथ से देना और दूसरे हाथ से लेना है।
जिज्ञासुः जब पहले वो कन्नन भाई, विशालाक्षी माता था तब सब जगह से सेकण्ड संडे, चार संडे आता था। फिर वो जब चला गया तबसे ये ही लफड़ा चल रहा है। वो अन्नानूर नहीं जायेंगे। आवडी नहीं जायेंगे। ऐसा ही चलता रहा है। इसलिए जब संगठन होता है...
बाबाः प्रूफ तो वहाँ भेजो कम से कम। वहाँ तो सारा कम्प्यूटर में नूंध हो रहा है। क्या?
Student: I too called them one or two times, but all the people did not gather.
Baba: Then, what will Shivbaba also say? They see only their *lokik* family; so live and die in your *lokik* family only. Shivbaba gives with one hand and takes with the other hand.
Student: When Kannan *bhai*, Vishalakshi *mata* were here, students used to come from all the places every second Sunday, fourth Sunday. Then, ever since they have left the place (Chennai), this problem is going on. [Some say:] we will not go to Annanur (an area in Chennai city), [some say:] we will not go to Avadi (another suburb in Chennai city). It is going on like this. This is why when *sangathan* takes place...
Baba: At least send the *proof* there. There, everything is being recorded in the computer. What?

तीसरा जिज्ञासुः बाबा, इधर वाला उधर को नहीं जाता है, उधर वाला इधर को नहीं जाता है।
बाबाः चलो, जो ईर्ष्या-द्वेष रख रहे हैं, वो ईर्ष्या-द्वेष आपस में ब्राह्मणों में रख रहे हैं, वो सारा क्लीयर तो होना चाहिए ताकि हिस्ट्री क्लीयर हो जाए। जो राजायें हुए हैं हिस्ट्री में, इंडिया में, उन्होंने किया क्या है? ये ही तो सत्यानाश किया है। आपस में लड़-लड़ करके विदेशियों को स्थान दे दिया। विदेशियों ने इनकी ये कमजोरी समझ ली। अरे, ये तो आपस में तो लड़ रहे हैं। करो आक्रमण! बस विदेशी खेमे ने आक्रमण कर दिया! गई राजाई। नेपाल में भी ऐसे ही हुआ। अभी तक नेपाल में राजा रहा। अभी तक नेपाल में राजा रहा। लेकिन अन्दर-अन्दर जहाँ देखा कि इनमें फूट पड़ रही है, माओवादियों ने आक्रमण कर दिया। किसने? ओ अम्मावादियों ने आक्रमण कर दिया। महाकाली के फालोअर्स ने। बस! नई दुनिया की पालना करने वालों की राजाई सफाचट्ट हो गई। पहले आक्रमण कर दिया। फिर बाद में क्या किया? राजाई में घुस के बैठ गए। जोड़-तोड़ करके जैसे आज इंडिया गवर्मेन्ट जोड़-तोड़ करके अपनी सत्ता बना लेती है। ऐसे जोड़-तोड़ करके उन्होंने अपनी सत्ता भी बना ली।
Third student: Baba, people of one place do not go to another place.
Baba: Alright, those who maintaining jealousy among themselves, among the Brahmins; all that should become *clear* so that the *history* becomes *clear*. What did the kings of India do in the *history*? They have caused this very ruination. They fought among themselves and gave

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

opportunity to the foreigners. The foreigners understood their weakness. [They thought:] *Arey*, they are fighting among themselves. Attack [them]. That's it! The foreign camp invaded them [and] they lost their kingship. It happened like this in Nepal as well. Until now there was a king in Nepal. Till now there was a king in Nepal. But when it was seen that there is internal conflict among them, the Maoists attacked. Who? The 'O *Ammavadis'*, the *followers* of Mahakali attacked them. That's it! The kingship of those who sustain the new world was ruined. They attacked first. Then what did they do? They intruded in the kingship. They made adjustments, just as today's Indian government makes adjustment and establishes its authority, similarly they too have established their authority.

अभी नेपाल में किसका शासन है? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) प्रजातंत्र तो है, लेकिन माओवादियों का शासन हो गया। उनकी बहुमत नहीं है लेकिन जोड़-तोड़ करके बहुमत बना लिया। जैसे जनता पार्टी ने पिछली बार बनाया था। इसलिए अंदर की जो फूट है - हम तुमसे बात नहीं करेंगे, हम उनसे नहीं मिलेंगे, ये बात तो अटल बिहारी वाजपेयी की अखबारों में छप गई कि जनता पार्टी में सबसे भारी कमजोरी है संवादहीनता। आपस में बातचीत ही नहीं करना चाहते एक दूसरे से। इतनी नफरत भरी हुई है, स्वार्थ की बातों को लेकर। अरे स्वार्थ की बातों को, चलो ठीक है, लेकिन जहाँ सारे यज्ञ के नुकसान की बात आती है, वहाँ तो हम एक होकरके रहें। ये गीता पाठशालायें बाप का घर है न कि किसी व्यक्ति का घर है?

Now whose ruling is it in Nepal? (Student said something.) It is no doubt a democracy (*prajatantra*), but there is a rule of Maoists. They do not have majority (*bahumat*), but they have managed to get majority by making adjustments. Just like, the Janata Party (a political party in India) had done the last time. This is why, the inner conflict: I will not talk to you, I will not meet him. This statement of Atal Bihari Vajpayee (the former Prime Minister of India who headed the Bharatiya Janata Party's coalition government) was published in the newspapers that the biggest weakness of Janata Party is lack of communication (*sanvaadheenata*). They do not want to talk to each other at all. There is so much hatred filled in them on the issues of selfishness. *Arey*, it is alright in case of the issues of selfishness, but when it is the matter of loss to the whole *yagya* , at least then you should be united. Are these *Gitapathshalas* the Father's home or are they the homes of a particular person?

जिज्ञासुः बाप का घर है।

बाबाः बाप का घर है। बाप का घर है, मान लो कोई खुदा न खास्ता कोई प्रकार का किसा का अपमान भी हो गया; गीता पाठशाला के इंचार्ज ने कोई अपमान भरी बात कह दी तो सारे यज्ञ की दृष्टि से उसको सहन कर लेने में फायदा रहेगा या नुकसान हो जावेगा? फायदा ही रहेगा। नुकसान नहीं हो सकता। संगठन को तोड़नेवाले, बात करने वाले का नुकसान होगा। सहन करने वाले का नुकसान नहीं हो सकता।

Student: They are Father's home.

Baba: They are the Father's home. They are the Father's home; suppose, someone is insulted by chance in some way; if the in charge of a *Gitapathshala* uttered some insulting words to you, then will it be beneficial if you tolerate those words from the point of view of the [benefit of the] entire *yagya* or will it be harmful? It will certainly be beneficial. You cannot suffer loss. The one

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

who breaks the gathering, the one who uttered [insulting] words will suffer loss. [But,] the one who tolerated cannot suffer a loss.

Extracts-Part-4

समयः 25.05-27.53

जिज्ञासुः बाबा, भक्तिमार्ग में बोला - कभी अधर्म जास्ती होगा तो धर्म स्थापन करने के लिए आएगा। कभी अधर्म जास्ती होगा तो।

बाबाः अधर्म? अधर्म बढ़ जाएगा।

जिज्ञासुः अधर्म बढ़ जाएगा तो धर्म स्थापन करने के लिए मैं आएगा।

बाबाः आता हूँ। हाँ। जब अधर्म बढ़ जाता है...

जिज्ञासुः अभी अधर्म कलियुग में बढ़ता जाता है...

बाबाः मूल अधर्म क्या बताया? अधर्म की, धारणा की, गैर-धारणा की, अधर्म की सबसे मूल बात कौनसी बताई? जितनी भी धर्म की धारणायें हैं, उन धारणाओं में सबसे मूल बात एक ही है। वो मूल बात जब बहुत व्यापक हो जाती है, बहुत विस्तार हो जाता है, तब मैं आता हूँ। मूल बात कौनसी है? अधर्म की एक मूल बात है।

दूसरा जिज्ञासुः भगवान एक है।

जिज्ञासुः भगवान को सर्वव्यापी बताना।

Time: 25.05-27.53

Student: Baba, it has been said in the path of *bhakti*: I will come to establish religion (*dharma*) when irreligiousness (*adharma*) increases; when irreligiousness increases.

Baba: Irreligiousness? Irreligiousness will increase.

Student: When irreligiousness increases, I will come to establish religion.

Baba: I come. Yes. When irreligiousness increases...

Student: Now irreligiousness increases in the Iron Age (*kaliyug*).

Baba: What is the main irreligiousness? What is the main thing about irreligiousness, ethics and non-ethics? Among the ethics of *dharma* (religion), the main thing among those ethics is only one. When that main thing becomes widespread, when it greatly expands, then I come. What is the main thing? There is one main thing about irreligiousness.

Second student: God is one.

Student: To say that God is omnipresent.

बाबाः भगवान को सर्वव्यापी कहना ये अधर्म की मूल बात है। और धर्म की मूल बात फिर क्या हुई? एकव्यापी अगर बुद्धि में बैठ गया तो धर्म के मूल को पकड़ लिया। और एक के ऊपर निश्चय थोड़ा हट गया, एक परसेन्ट निश्चय हट गया, और 99 परसेन्ट एक के ऊपर निश्चय काबिज है तो वो एक परसेन्ट जो अनिश्चय है वो भी क्या हो करेगा? नीचे गिरा देगा। इसलिए निश्चय की परिभाषा बताई है; निश्चय माने? सौ परसेन्ट निश्चय। ऐसे नहीं कि ये 99 % हमारा बाप है। 1% हमारा बाप... ऐसा भी हो सकता है, 1% हमारा बाप न हो। सब सत्यानाश कर दिया। या तो एकव्यापी है या तो सर्वव्यापी है। और यही चक्कर चल रहा है एडवांस पार्टी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

में। क्या? अभी-अभी निश्चय, और अभी-अभी अनिश्चय। माया अपना काम कर रही है अनिश्चय करने का।

Baba: The main thing of irreligiousness is to term God to be omnipresent. And then what is the main thing about *dharma*? If the one in whom God is present sits in the intellect, then you have grasped the main thing of *dharma*. And if you slightly lose faith on the One, if you lose faith one *percent*, and if your faith on one is constant to the extent of 99%, then what will even that one *percent* doubt do? It will make you fall down. This is why faith has been defined as; what is meant by faith (*nishchay*)? [There should be] hundred *percent* faith. It is not that He is 99% my Father. 1% He is not my Father... it is also possible that He is not my Father one *percent*? You have ruined everything. Either He is present in one or He is omnipresent. And the same problem is going on in the Advance Party. What? Just now they develop faith and the next moment they lose faith. Maya is performing her task of making doubtful.

समयः 27.58-37.03

जिज्ञासुः बाबा, ये बुक मार्च 2008 में दिल्ली से मिल सकता है ना।

बाबाः ये किताब चाहिए?

जिज्ञासुः हाँ। दिल्ली से मिल सकता है ना।

बाबाः ये किताब का जो मैटर है वो पहले छप गया। पहले बनाया; बनाने वाले ने हैड आफिस से पास भी करा लिया। लेकिन हेड आफिस से यह डायरेक्शन (direction) मिला कि ये किताब में हार्श (harsh) भाषा बहुत है, हार्श लेंग्वेज है। इसलिए मिनी मधुबनों का कोई एड्रेस इसमें नहीं डाला जाएगा। इसमें मिनीमधुबन का कोई एड्रेस नहीं है।

जिज्ञासुः गीता पाठशाला।

बाबाः गीता पाठशाला का एड्रेस (address) डाल सकते है। फोन नंबर दे सकते हैं। तो देखिए शायद ऐसा ही होगा। आप देख लीजिए। मिनी मधुबनों का एड्रेस और फोन नंबर होगा लास्ट में, शुरुआत में। शुरुआत में देखो। आखरी पेज में देखो। टाइटल पेज में देखो। अरे, एड्रेस तो कोई होगा। लास्ट पेज पर देखो।

जिज्ञासुः नहीं है।

Time: 27.58-37.03
Student: Baba, we can get this book of March 2008 from Delhi, can't we?
Baba: Do you want this book?
Student: Yes, we can we get it at Delhi, can't we?
Baba: The *matter* of this book was printed beforehand. It was prepared before; the person who prepared it also got it passed (i.e. approved) from the Head Office. But he got a *direction* from the Head Office that the language in this book is very *harsh*. This is why the address of any *minimadhuban* will not be mentioned in it. There is no address of any *minimadhuban* in this.
Student: *Gitapathshala*.
Baba: The address of *Gitapathshala* can be put. Phone number [of *Gitapathshala*] can be given. So check it, perhaps, it would be like this. You can see it. There might be the *address* and phone numbers of the *minimadhubans* in the *last* or in the beginning. Look in the beginning. See the last *page*. See the *title page*. *Arey*, there must be some *address*. See the *last page*.
Student: It is not available.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः (बाबा ने खुद किताब जांच कर कहा) - नीलंगा ही लिखा है ना।

जिज्ञासु: फ्रंट पेज में नीचे है।

बाबा: हांजी, एक मोबाइल नंबर और एक लोकल नंबर। उतना ही दिया हुआ है। लेकिन इसका जो मैटर है वो टाइटल पेज से बिल्कुल मिलता-जुलता नहीं है। क्या? टाइटल पेज (title page) अलग हो गया। और इसका अंदर का मैटर (matter) अलग हो गया। इसका जो टाइटल है वो त्रिमूर्ति की किताब के लिए ठीक है। क्या? जो त्रिमूर्ति की किताब है उसके लिए ठीक तो है। लेकिन वो ठीक की जिम्मेवारी अभी तक किसी ने ली नहीं है।

जिज्ञासुः पढ़ सकते हैं ये?

बाबाः बाबा की तरफ से, आ.ई.वि.वि (आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय) की तरफ से ये जिम्मेदारी नहीं ली जाएगी।

Baba: (Baba checked the book Himself) – It is written Neelanga (a place in Maharashtra), isn't it?

Student: It is mentioned below on the *front page*.

Baba: Yes. There is a *mobile number* and a *local number*. Only this much is mentioned. But its *matter* (the text) does not match at all with the *title page*. What? The *title page* is different. And the *matter* inside is different. Its *title* is correct for the book *'Trimurty'*. What? It is no doubt ok for the book *'Trimurty'*. But nobody has taken the responsibility for it being correct so far.

Student: Can we read it?

Baba: Baba or A.I.V.V (Adhyatmik Ishwariya Vishwa Vidyalaya) will not bear this responsibility.

जिज्ञासुः पढ़ने का ठीक नहीं है क्या?

बाबाः नहीं मैटर है लेकिन, सच्चाई भी है, लेकिन कोई सच्चाई जो है, मतलब कड़ुवे रूप में नहीं पेश करनी चाहिए। सच्चाई हो, लेकिन सच्चाई ऐसी हो जिससे दूसरे का दिल खुश हो जाए। चलो विरोधी भी है, तो भी उसे लगे कि हाँ, ये ईश्वरीय नालेज है, और ये दिल खुश करने वाली मिठाई है। ज्ञान तो दिया जाए , लेकिन देह भान में आकरके ज्ञान न दिया जाए। देह भान में आकरके जो ज्ञान दिया जाता है तो वो देने वाला ये नहीं देखता है कि ये कमजोरी हमारे अन्दर भी है। क्या? देने वाले के अन्दर भी वो कमजोरी सबसे जास्ती होती है, लेकिन वो अपनी तरफ से आँखें बन्द। दूसरे की तरफ उँगली ज्यादा उठायेंगे। चार उंगलियाँ अपनी तरफ इशारा कर रही हैं कि ये कमजोरी हमारे अन्दर भी है।

Student: Is it not correct to read it?

Baba: No, there is *matter* [in it], there is truth as well, but the truth, should not be presented in a bitter way. There should be truth, but the truth should be such that it makes the heart of others happy. Alright, even if opposing [matter], still he should feel that this is the *knowledge* of God, and this is a sweet that makes the heart happy. Knowledge should be given, but the knowledge should not be given in body consciousness. When the knowledge is given in body consciousness, the giver does not see that this weakness is present in him as well. What? Even the giver has this weakness to the maximum extent, but his eyes are closed to his own [weakness]. He will point out finger more towards others. [But] the [rest of the] four fingers are pointing towards him that this weakness is in him as well.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दूसरा जिज्ञासुः पुस्तक का टाइटल 'श्रीमत से सद्गति, मनुष्य मत से दुर्गति' ऐसा है।

बाबाः टाइटल सिर्फ देने से क्या होगा? अन्दर भी तो मैटर होना चाहिए श्रीमत का। सारा जो मैटर है, वो टाइटल से कनेक्ट (contact) होना चाहिए। टाइटल पेज (title page) से कनेक्ट होना चाहिए। जो किताब का टाइटल दिया उससे कनेक्ट होना चाहिए।

दूसरा जिज्ञासुः सिर्फ पढ़ने के लिए अच्छा है। सिर्फ पढ़ना के लिए।

बाबाः हाँ, हार्श लैंग्वेज को कोई आब्सर्व (observe) कर सकते हैं तो ठीक है।

जिज्ञासुः इतना फायदा नहीं होएगा।

बाबाः निकालने वाला नाली में से, कचड़े में से अच्छी चीज़ निकाल लेता है। हाँ। ऐसी बात नहीं। उसमें मैटर (matter) गलत नहीं है। लेकिन बहुत हार्श है। अभी शायद किसी ने पढ़ी भी नहीं है किताब।

जिज्ञासुः नहीं पढ़ी। कल ही लेकरके आया।

बाबाः अच्छा, टाइटिल पेज (title page) देखकरके लोग आकर्षित होकर फटाक से ले लेते हैं। बिक रही है सबसे जास्ती। इसका दूसरा संस्करण फटाक से छपने लगा।

Second student: The title of the book is '*Shrimat se sadgati, manushyamat se durgati'* (*shrimat* causes true salvation; the directions of human beings cause degradation).
Baba: What will happen by just giving a *title*? The *matter* inside should also be in accordance with *shrimat*. The entire *matter* should be connected with the *title*. It should be connected with the *title page*. It should be connected with the *title* of the book.
Second student: It is good just to read. Just for reading purpose.
Baba: Yes, it is ok if anyone can *observe* the *harsh language*.
Student: It will not be much beneficial.
Baba: A [skilled] person can extract goodness even from a drain, from mire. Yes. It is not so. The *matter* in it is not wrong. But it is very *harsh*. Perhaps nobody has read the book so far.
Student: We haven't read it. We brought it yesterday itself.
Baba: *Accha*, people see the *title page*, get attracted and buy it immediately. It is being sold a lot. They have started publishing its second edition immediately.

दूसरा जिज्ञासुः इसमें सब फोटो डाल दिया बाबा। वेदान्ती बहन का, जगदम्बा का, ये परमीशन (permission) दिया क्या? ये छपाने का? फोटो छपाए हैं ना?

बाबाः अपनी जिम्मेवारी पे छपाओ। हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं। कोई लड़ाई लड़ने आएगा तो हम कहेंगे - जिसने किताब छपायी है, उससे पूछो जाके। हम तो छपाई नहीं। न हमारा कोई एड्रेस है। न मिनी मधुबनों से ये किताबें फरोख्त की जा रही हैं। न हमारे यहाँ इसको स्टाक (stock) रखा जाता है।

दूसरा जिज्ञासुः फिर इसको एलाउ (allow) क्यों किया?

बाबाः मैटर उन्होंने पहले दे दिया ना।

दूसरा जिज्ञासुः फोटो छपा दिया।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः इस किताब का मैटर पहले दे दिया। ये फोटो तो बम्बई वालों ने पहले उसमें इश्तहारों में लगाने के लिए, वहाँ कोई मेला-वेला हो रहा था बम्बई में, तो इश्तहारों में लगाने के लिए उन्होंने ये पोस्टर तैयार किया। वो पोस्टर को उठाके उन्होंने झटाझट किताब छपा दिये।

Second student: Baba, all the photographs have been published in it. Photo of sister Vedanti, of Jagdamba; was permission given for this? To publish this? Photographs have been published, haven't they?

Baba: You can publish on your own responsibility. We don't have any responsibility. If someone comes to fight, we will say, Go and ask the person who has published the book. We haven't published it. It does not contain our *address*, nor is it being sold through the *minimadhubans* and it is not being stocked at our place either.

Second student: Then why was it allowed?

Baba: They sent the *matter* beforehand, didn't they?

Second student: They published the photographs.

Baba: The *matter* of this book was given beforehand. This *photo* was first prepared by those from Bombay to put it in the advertisements. A fair was being organized in Bombay so this *poster* was prepared to put them in the advertisements. They picked up those posters and published the book immediately.

दूसरा जिज्ञासुः फिर बाबा, संस्था का नाम खराब हो जाएगा ना। आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय।

बाबाः आध्यात्मिक विद्यालय उसमें नाम कहाँ है?

दूसरा जिज्ञासुः नाम तो नहीं है। लेकिन ये लोग, ये जो कर रहे हैं, गलतियाँ जो बच्चे कर रहे हैं एडवांस पार्टी के, तो इसका असर इन्स्टीट्यूशन (institution) के ऊपर आएगा ना।

बाबाः इसमें इन्स्टीट्यूट का नाम ही कहाँ है?

दूसरा जिज्ञासुः इन्स्टीट्यूट (institute) का नाम नहीं। बनाने वाले तो....

बाबाः वो तो बनाने वाले उनकी अपनी... कोई मना है? यहाँ तो, यहाँ तो स्वतंत्रता दी हुई है सबको। यहाँ राम वाली आत्मा अपनी घरवाली के ऊपर कंट्रोल नहीं कर रहा है।

दूसरा जिज्ञासुः एक को देखकर...

बाबाः एक बात। सबको स्वतंत्रता देनी चाहिए या नहीं देनी चाहिए?

जिज्ञासुः देनी चाहिए।

बाबाः देनी चाहिए, तो उनको स्वतंत्रता नहीं मिलनी चाहिए? स्वतंत्र रहो और स्वतंत्र रहने दो। ये तानाशाही करना, ये मोनार्की (monarchy) चलाना, ये अच्छी बात नहीं है। हिटलरशाही ये तो बहुत खराब बात है।

Second student: Then Baba, this will spoil the name of the institution, will it not? Adhyatmik Ishwariya Vishwavidyalaya.

Baba: Where is the name 'Adhyatmik Vidyalay' in it?

Second student: The name is not mentioned. But these people who are doing this, the mistake that the children of Advance Party are making, this will affect the institution, won't it?

Baba: Where is the name of the *institute* in this?

Second student: The name of the *institute* is not mentioned. [But] the person who has prepared it...

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: The people who make it have their own... is anyone forbidden? Here, everyone has been given freedom. Here, the soul of Ram [himself] is not controlling his own wife.
Second student: By seeing one...
Baba: There is one thing. Should everyone be given freedom or not?
Student: They should be given.
Baba: They should be given. So, shouldn't they get freedom? Be free and let others be free. It is not good to practice dictatorship, *monarchy*. Hitler ship is a very bad thing.

दूसरा जिज्ञासुः फिर एक को देखकर सभी करते है ना। अभी ये पुस्तक जो बना दिया है; अगर जो भी देखता है, वो देख के, 'अच्छा मैटर है'।

बाबाः ये हिटलरशाही हिडिम्बा के औलादों द्वारा चलाई जाती है।

दूसरा जिज्ञासुः अभी एक देख लिया है, उसको अनुवाद करेंगे। फिर दुसरा जगह का....

बाबाः जो करेंगे सो पायेंगे। जिनको कड़ुवी चीज़ ही पसन्द है; बंगाल के लोग नीम के पत्तों की सब्जी बना-बना के खाते हैं, उनकी जो लिखने वाली भाषा है ना वो भी नुकीली है। एक-एक अक्षर नुकीला है। अक्षर ही सारे नुकीले हैं। इसमें आप क्या करेंगे? अरे, शिव बाप ने, शिव बाप ने आकरके जिस रथ को पकड़ा है, वो रथ वाली आत्मा ही नुकीले ज्ञान के बाण मारती है। उसके बाण ही प्रसिद्ध हैं। लेकिन बाण भी नम्बरवार होते हैं। एक होते हैं फर्स्टक्लास। और एक होते हैं फोर्थ क्लास। बाण शरीर को घायल करने वाले या दिल को घायल करने वाले या एक तरफ से दिल को घायल करें और दूसरी तरफ थपथपा भी दें, वरदान भी दे दें, वो अच्छे? घायल भी करें तो दूसरी तरफ वरदान भी मिल जाए।

Second student: Then everyone starts copying one, don't they? Now, when this book is prepared; is someone sees it [and says:] The *matter* is good.
Baba: This Hitler ship is practiced by the children of Hidimba (a demoness and wife of the Pandava named Bhima).
Second student: Now they have seen one (sample), it will be translated. Then at other place...
Baba: As you sow, so shall you reap. Those who like only bitter things; people of Bengal cook and eat curry of Neem leaves. The writing in their language is also sharp. Every alphabet is sharp. All the words are sharp. What can you do in this? *Arey*, the chariot that the Father Shiv has adopted after coming, the soul of that chariot itself shoots sharp arrows of knowledge. His arrows are famous. But the arrows are also number wise (according to the knowledge). One are *first class* and the other are *fourth class*. Are the arrows that injure the body or the arrows that injure the heart [good] or are those which hit the heart on one hand, and on the other hand they also soothe, they give blessings, good? They should injure as well as give blessings on the other hand.

समयः 37.08-38.45

जिज्ञासुः बाबा, वो पार्ट जो बताता है, आप बोलते हैं आगे जाते-जाते आपका अपना-अपना पार्ट मालूम होएगा। अभी तो कुछ दिखता नहीं है। आगे तो और टाइम लगेगा ना। अपना पार्ट दिखता नहीं है।

बाबाः अरे जब कंप्यूटर निकलता है तो कितनी जल्दी काम करता है? जो कंपनियाँ एक काम वर्षों में पूरा नहीं कर पाती थी, वो कंप्यूटर उसे धड़ाधड़ पूरा करता है। तो ये आखरीन ऐसी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

युक्ति निकलेगी कि सब बातें क्लीयर होने लगेंगी जल्दी-जल्दी, जल्दी-जल्दी, दिन दूनी रात चौगुनी।

Time: 37.08-38.45

Student: Baba, the thing that is said about the part; you say that in future you will come to know your part. Now we don't see anything. It will take more time in the future, will it not? We don't see our part.

Baba: *Arey*, when the computer starts, how fast it works? The task which the companies couldn't complete in many years, that computer completes it quickly. So, ultimately, such an idea will emerge that all the topics will start becoming clear. [It will become clear] very quickly, day in and day out.

जिज्ञासुः वो कंप्यूटर का काम जो अपना पार्ट खुलने का नम्बरवार ही होगा 2018 के बाद।

बाबाः 2018 में ब्रह्मा बाबा का कंप्यूटर तीखा हो जाएगा बेहद का कि ऐसा ही रहेगा?

जिज्ञासुः उनका तीखा हो जाएगा पर बाकी का?

बाबाः तीखा हो जाएगा तो नम्बरवार तीखे होने लगेंगे। ये कंप्यूटर ठप्प होने लगेंगे। अभी भी वो कंप्यूटर तो अभी भी तीखा है।

जिज्ञासुः लेकिन उसकी समझ किसी को नहीं आ रहा, ब्रह्मा बाबा जो कर रहा है कार्य उसकी समझ...।

बाबाः कुछ न कुछ तो है।

Student: The task of that computer of revelation of our part will take place number wise (according to *purusharth*) only after 2018.

Baba: Will the computer of Brahma Baba in an unlimited sense become fast in 2018 or will it remain the same (of same speed)?

Student: His computer will become fast, but what about the rest?

Baba: When his [computer] becomes sharp then, those of others will also start becoming fast number wise (according to *purusharth*). These [physical] computers will start crashing. That computer is fast even now.

Student: But no one understands it; the task that Brahma Baba is performing**,** understanding it...

Baba: There is something indeed.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info